|  |
| --- |
| 30. Mai 2024 |
| **Fronleichnam B** |
| Erste Lesung: Ex 24,3-8; Zweite Lesung: Hebr 9,11-15; Evangelium: Mk 14,12-16.22-26 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 805, 1+2+4 | Kommt her, ihr Kreaturen all |
|  | GL 808, 1+2 | Deinem Heiland |
|  | GL 477, 1+2 | Gott ruft sein Volk zusammen |
|  |  |
| Kyrie: | Rufe (Melodie GL 163) | Herr, erbarme dich |
|  | Herr Jesus, du Priester des Neuen Bundes. |
|  | Du schenkst uns durch deinen Tod das Leben: |
|  | Du gibst uns dein Fleisch und dein Blut zur Speise. |
|  | Du rufst uns alle zu deinem Opfermahl. |
|  | Herr Jesus, du bist der Diener aller. |
|  | Du bist unser Herr und Meister. |
|  |  |
| Gloria: | GL 714 | Ehre dir, Gott |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 116, 12-13.15-18 |  |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 305, 3 | Der Kelch, den wir segnen |
|  | oder Sequenz: |  |
|  | GL 808, 1-5 | Deinem Heiland |
|  |  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 3 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *So spricht der Herr:* |
|  | *Ich bin das lebendige Brot,* |
|  | *das vom Himmel gekommen ist.* |
|  | *Wer dieses Brot isst, wird in Ewigkeit leben.* |
|  |  |  |
| Credo: | GL 794 | Wir glauben, Herr |
| Gabenbereitung: | GL 184 | Herr, wir bringen in Brot und Wein |
|  | GL 282, 1-4 | Beim letzten Abendmahle |
| Sanctus: | GL 708 | Heilig |
| Agnus Dei: | GL 498, 1+2 | Das Heil der Welt |
|  | GL 497, 1-3 | Gottheit, tief verborgen |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 209 | Du teilst es aus |
|  | GL 211, 1+2+7-9! | Wir rühmen dich, König |
|  | GL 213 | O heilge Seelenspeise |
|  | GL 215, 1+2 | Gott sei gelobet |
|  | GL281 | Also sprach beim Abendmahle |
| Schluss: | GL 807 | Lasst, Christen, hoch |